Original Article
ISSN(Online): 2584-0983
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© Shiksha Samvad|Volume-04| Issue-01| September- 2026
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.23

किशोरवय विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता: एक सहसम्बंधात्मक अध्ययन

डॉ. नीलेश कुमार पटेल
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
एस.जी.बी.वाई.एस.एस. महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बोरावां (खरगोन), म.प्र
Email: nktp12374@gmail.com

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोरवय विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना था। अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत 77 विद्यार्थियों (33 छात्र एवं 44 छात्राएँ) को सुविधाजनक न्यादर्श पद्धति द्वारा चयनित किया गया। अध्ययन सर्वेक्षणात्मक शोध विधि पर आधारित था। आँकड़ों के संकलन हेतु के. एस. मिश्रा द्वारा विकसित एवं मानकीकृत आध्यात्मिक बुद्धि मापनी तथा सोनल शर्मा एवं मोहम्मद शाकिर द्वारा विकसित एवं मानकीकृत संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का उपयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु पीयरसन के गुणन-आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्रों में आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध ($r = 0.705$) पाया गया। समस्त विद्यार्थियों के स्तर पर भी दोनों चरों के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध ($r = 0.323$) प्राप्त हुआ, जबकि छात्राओं में यह सहसम्बन्ध सार्थक नहीं पाया गया ($r = 0.147$)। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आध्यात्मिक बुद्धि किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता से सकारात्मक रूप से सम्बद्ध है। अध्ययन के निष्कर्ष विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास तथा विद्यालयों में आध्यात्मिक एवं मूल्यपरक शिक्षा कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

कुंजी शब्द: *आध्यात्मिक बुद्धि, संवेगात्मक परिपक्वता, व्यक्तित्व विकास, किशोर विद्यार्थी, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय*

1. प्रस्तावना

किशोरावस्था जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक दृष्टि से तीव्र परिवर्तन अनुभव करता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों को आत्म-पहचान, करियर संबंधी चिंताओं, साथियों के प्रभाव, पारिवारिक अपेक्षाओं तथा शैक्षिक दबाव जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में उनके व्यवहार, निर्णय क्षमता तथा मानसिक संतुलन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। आध्यात्मिक बुद्धि विद्यार्थियों को जीवन के उद्देश्य, नैतिक मूल्यों, आत्म-जागरूकता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करती है, जबकि संवेगात्मक परिपक्वता उन्हें अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार करने में सक्षम बनाती है।

किशोर विद्यार्थियों में इन दोनों चरों का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी आयु में व्यक्तित्व की आधारशिला निर्मित होती है और भविष्य के व्यवहारिक एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है। यदि विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धि का स्तर उच्च हो, तो वे तनाव, असफलता और जीवन की चुनौतियों का अधिक संतुलित ढंग से सामना कर सकते हैं। इसी प्रकार, संवेगात्मक परिपक्वता स्वस्थ सामाजिक संबंधों, बेहतर

समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक सफलता को प्रोत्साहित करती है। अतः किशोर विद्यार्थियों में आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य संबंध का अध्ययन उनके समग्र विकास को समझने तथा विद्यालयों में प्रभावी शैक्षिक एवं मार्गदर्शन कार्यक्रमों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

1.1 आध्यात्मिक बुद्धि

मनोवैज्ञानिकों द्वारा समय समय पर बुद्धिलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित किया गया है । बुद्धिलब्धि (IQ) के आधार पर प्रायः किसी व्यक्ति की प्रतिभा, तार्किक क्षमता एवं विवेक का आंकलन किया जाता है । जिस व्यक्ति की बुद्धिलब्धि जीतनी अधिक होती है उसे उतना ही अधिक बुद्धिमान कहा जाता है । 1989 में जॉन मेयर, पीटर सेल्वी एवं डेनियल गोलमेन द्वारा संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) की संकल्पना प्रस्तुत की गयी । इसे उन्होंने स्वयं की एवं दूसरों की भावनाएं समझने की योग्यता के रूप में परिभाषित किया । तत्पश्चात 1997 में डानाह जोहर (Danah Zohar) ने अपनी पुस्तक '*ReWiring the Corporate Brain: Using the New Science to Rethink How We Structure and Lead Organizations*' में सर्वप्रथम 'Spiritual Intelligence' शब्द का प्रयोग किया । इसी वर्ष केन ओडोनेल ने भी अपनी पुस्तक 'Endoquality - the emotional and spiritual dimensions of the human being in organizations' में 'Spiritual Intelligence' शब्द का प्रयोग किया । रॉबर्ट एमन्स (2000) आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को "दैनिक समस्या समाधान और लक्ष्य प्राप्ति को सुविधाजनक बनाने के लिए आध्यात्मिक जानकारी के अनुकूली उपयोग" के रूप में परिभाषित करते हैं। सिंडी विगल्सवर्थ (2006) ने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को "परिस्थितियों की परवाह किए बिना आंतरिक और बाहरी शांति बनाए रखते हुए, ज्ञान और करुणा के साथ कार्य करने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया। विनीत कुमार और मंजू मेहता (2011) ने इस अवधारणा पर व्यापक कार्य किया है। उन्होंने आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता को "किसी व्यक्ति की 'स्वयं' को समझकर और मानवीय मूल्यों के प्रति उच्च स्तर की अंतरात्मा, करुणा और प्रतिबद्धता रखकर जीवन में सामाजिक रूप से प्रासंगिक उद्देश्य रखने की क्षमता" के रूप में परिभाषित किया"।

1.2 संवेगात्मक परिपक्वता

संवेग (Emotion) शब्द की उत्पत्ति 1579 में हुई थी, जब इसे फ्रांसीसी शब्द एमोवोइर (Émouvoir) से रूपांतरित किया गया था, जिसका अर्थ है, "उत्तेजित करना"। संवेग शब्द को अकादमिक चर्चा में जुनून (Passion) शब्द की जगह पेश किया गया था। संवेग शब्द का उपयोग उन स्थितियों को संदर्भित करने के लिए किया जा सकता है जो अल्पकालिक होती हैं (जैसे कि नाराज़गी या संतुष्ट) और उन स्थितियों को संदर्भित करने के लिए जो किसी चीज़ पर निर्देशित नहीं होती हैं (जैसे कि चिंता और अवसाद)। कुछ सिद्धांतकारों ने संवेगों को आंतरिक या बाहरी घटनाओं के प्रति असतत और सुसंगत प्रतिक्रियाओं के रूप में वर्णित किया है, जिनका जीव के लिए एक विशेष महत्व है। संवेग अवधि में क्षणिक होते हैं और प्रतिक्रियाओं के एक समन्वित समूह से मिलकर बनते हैं, जिसमें मौखिक, शारीरिक, व्यवहारिक और तंत्रिका तंत्र शामिल हो सकते हैं।

संवेगात्मक परिपक्वता से तात्पर्य उस योग्यता से है जिसमें व्यक्ति संवेगों पर नियन्त्रण रखते हुए; संवेगों की अभिव्यक्ति समाज के नियम और आचरण संहिता को ध्यान में रखकर व्यवहार करता है। संवेगात्मक परिपक्वता, हमारे संवेगों को प्रभावी ढंग से समझने और प्रबंधित करने की क्षमता है ताकि हम स्वस्थ संबंध बना सकें और बनाए रख सकें और एक संपूर्ण जीवन जी सकें (फर्नांडीस और डेविड, 2016)। इसमें चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी भावनाओं को पहचानना और उन्हें उचित तरीके से व्यक्त करना शामिल है (जॉबसन, 2020)। संवेगात्मक रूप से परिपक्व लोग आत्म-जागरूक होते हैं, अपने संवेगों के प्रति सजग होते हैं, और उन्हें प्रबंधित करना जानते हैं। संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति तनावपूर्ण या

प्रतिकूल परिस्थितियों से निपटने और जीवन की चुनौतियों का सफल समाधान पाने में मदद करने के लिए लगातार विभिन्न भावनात्मक और संज्ञानात्मक कौशल पर काम करते हैं।

जर्सिल्ड (1963) के अनुसार 'संवेगात्मक परिपक्वता उस सीमा को संदर्भित करती है जिस तक एक व्यक्ति ने जीवन की समृद्धि के लिए अपनी क्षमता को पहचाना है और चीजों का आनंद लेने, दूसरों के साथ खुद को जोड़ने, दूसरों से प्यार करने और दूसरों के साथ अपनी खुशी साझा करने की अपनी क्षमता विकसित की है; जीवन के दुखों को पूरे दिल से स्वीकार करने की उसकी क्षमता और जब चिंता करने का अवसर हो तो बहादुरी के झूठा दिखावा किये बिना अपनी परेशानी दिखाने की उसकी क्षमता ही संवेगात्मक परिपक्वता है'। क्रो और क्रो (1962) के अनुसार 'किसी भी आयु वर्ग का व्यक्ति भावनात्मक रूप से परिपक्व हो सकता है, जो व्यक्ति के व्यवहार और दृष्टिकोण पर सीधे असर डालने वाले कुछ भावनात्मक उत्तेजकों की उपेक्षा करके तनाव को दूर करने की क्षमता रखता है'। जियोघेगन एवं अन्य. (1963) के अनुसार 'एक व्यक्ति को भावनात्मक रूप से परिपक्व तब माना जाता है, जब किसी स्थिति के प्रति उसकी प्रतिक्रियाएँ उसके विकास की डिग्री के अनुकूल हों और स्थिति की माँगों के लिए संतुलित हों'। सिंह (1999) ने अपने अध्ययन में बताया कि 'भावनात्मक परिपक्वता की मदद से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व पैटर्न का निर्धारण किया जा सकता है। भावनात्मक परिपक्वता भी किशोरों के विकास में एक नियंत्रण चर के रूप में प्रमुख भूमिका निभाती है'।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं –

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धिएवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धिएवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का अध्ययन करना।

2 प्रविधि

यह एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन है, जिसमे अध्ययन की समय सीमा को दृष्टिगत रखते हुए सुविधाजनक न्यादर्श (Convenient Sampling Method) पद्धति से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोरवा, जिला अलीराजपुर में सत्र 2024-25 में कक्षा 11 वी एवं 12 वी में अध्ययनरत 77 विद्यार्थियों (33 छात्र एवं 44 छात्राएं) को शामिल किया गया।

2.1 उपकरण

अध्ययन में आध्यात्मिक बुद्धि के आंकलन हेतु के. एस. मिश्रा द्वारा विकसित एवं मानकीकृत 'आध्यात्मिक बुद्धि मापनी' तथा संवेगात्मक परिपक्वता के आंकलन हेतु सोनल शर्मा एवं मोहम्मद शाकिर द्वारा विकसित एवं मानकीकृत 'संवेगात्मक परिपक्वता मापनी' का प्रयोग किया गया ।

2.2 प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया

चूँकि अध्ययन के अधीन दोनों चरों से प्राप्त आंकड़े सतत पैमाने के थे अतः परिकल्पना परिक्षण हेतु पीयरसन के गुणन आघूर्ण सहसंबंध का प्रयोग किया गया।

3. परिणामों की व्याख्या और चर्चा

अध्ययन में परिकल्पनाओं के सांख्यिकीय परिक्षण से प्राप्त परिणामों की व्याख्या एवं उन परिणामों पर चर्चा उद्देश्यवार की गयी है, जो इस प्रकार है -

3.1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसंबंध का अध्ययन करना

तालिका क्र. 1: छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसंबंध

		Spiritual Intelligence	Emotional Maturity
Spiritual Intelligence	Pearson Correlation	1	.705**
	Sig. (2-tailed)		.000
	N	33	33
Emotional Maturity	Pearson Correlation	.705**	1
	Sig. (2-tailed)	.000	
	N	33	33

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

उपरोक्त तालिका क्र. 1के अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्धका मान 0.7 है ।यह मान धनात्मक एवं मध्यमस्तरीय (Moderate) है एवं सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है ।अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है । अर्थात उच्च आध्यामिक बुद्धि वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालयस्तर के छात्रों में उच्च संवेगात्मक परिपक्वता पायी जाती है तथा निम्न आध्यामिक बुद्धि वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालयस्तर के छात्रों में निम्न संवेगात्मक परिपक्वता पायी जाती है । साथ ही सहसंबंध का मान 0.7 यह भी प्रदर्शित करता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मानों में परिवर्तन में 49% उभयनिष्ठता (Commonness) है ।

Sharifi-Rigi et al (2019) के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की आध्यात्मिक लब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध होता है। जो कि इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों के संगत है। इस प्रकार Acharya (2022), Kaur & Vyas (2022) एवं Sarath, Simi &Selvamari (2022) द्वारा किये गए अध्ययन से प्राप्त परिणाम भी इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों की पुष्टि करते हैं ।परन्तु Ambhore (2019) के अध्ययन में आध्यात्मिक लब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसंबंध प्राप्त नहीं हुआ । Bolghan-Abadiet al (2014) द्वारा ज्ञात किया गया कि जीवनस्तर की गुणवत्ता की भविष्यवाणी करने में आध्यात्मिक बुद्धि की प्रभावी भूमिका होती है ।अतः इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों का समर्थन होता है ।

3.2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का अध्ययन करना

तालिका क्र. 2: छात्राओंकी आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसंबंध

		Spiritual Intelligence	Emotional Maturity
Spiritual Intelligence	Pearson Correlation	1	.147
	Sig. (2-tailed)		.341
	N	44	44
Emotional Maturity	Pearson Correlation	.147	1
	Sig. (2-tailed)	.341	
	N	44	44

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

उपरोक्त तालिका क्र. 2 के अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर कीछात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का मान 0.14 है । यह मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नही है ।अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर कीछात्राओं के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक सम्बन्ध नही पाया जाता है । Ambhore (2019) के अध्ययन में आध्यात्मिक लब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसंबंध प्राप्त नहीं हुआ ।जो कि इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों के संगत है। Jhajhadiya (2015), Kumar (2017) एवं Choudhary & Bansal (2023) के अध्ययन में छात्रों की तुलना में छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का माध्य सार्थक रूप से उच्च पाया गया।अर्थात छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के माध्य फलान्कों में सार्थक अंतर होता है। Ghosh (2019) द्वारा भी ज्ञात किया गया कि लड़कों और लड़कियों की संवेगात्मक परिपक्वता के बीच सार्थक अंतर था। Deepa (2023) ने अपने अध्ययन में ज्ञात किया कि छात्राओं की की तुलना में छात्राओं की औसत आध्यात्मिक बुद्धि अधिक होती है। अर्थात छात्रों एवं छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि के माध्य फलान्कों में सार्थक अंतर होता है।उपरोक्त अध्ययनों से प्राप्त परिणाम इसकी पुष्टि करते हैं कि आध्यात्मिक लब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसंबंध छात्रों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसंबंध से भिन्न प्राप्त हो सकता है। यह संश्लेषण प्रस्तुत अध्ययन में छात्राओं के लिए प्राप्त विपरीत परिणाम की पुष्टि करता है।

3.3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का अध्ययन करना

तालिका क्र. 3: विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसंबंध

		Spiritual Intelligence	Emotional Maturity
Spiritual Intelligence	Pearson Correlation	1	.323**
	Sig. (2-tailed)		.004
	N	77	77
Emotional Maturity	Pearson Correlation	.323**	1
	Sig. (2-tailed)	.004	
	N	77	77

**. Correlation is significant at the 0.01 level (2-tailed).

उपरोक्त तालिका क्र. 3 के अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सहसम्बद्ध का मान 0.3 है । यह मान धनात्मक एवंनिम्नस्तरीय (Weak) है एवं सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है ।अतः यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है । अर्थात उच्च आध्यामिक बुद्धि वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में उच्च संवेगात्मक परिपक्वता पायी जाती है तथा निम्न आध्यामिक बुद्धि वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियोंमें निम्न संवेगात्मक परिपक्वता पायी जाती है । साथ ही सहसंबंध का मान 0.3 यह भी प्रदर्शित करता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मानों में परिवर्तन में 9% उभयनिष्ठता (Commonness) है ।

Sharifi-Rigi et al (2019) के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की आध्यात्मिक लब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध होता है। जो कि इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों के संगत है। इस प्रकार Acharya (2022), Kaur & Vyas (2022) एवं Sarath,

Simi & Selvamari (2022)द्वारा किये गए अध्ययन से प्राप्त परिणाम भी इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों की पुष्टि करते हैं । परन्तु Ambhore (2019) के अध्ययन में आध्यात्मिक लब्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सार्थक सहसंबंध प्राप्त नहीं हुआ । Bolghan-Abadiet al (2014) द्वारा ज्ञात किया गया की जीवनस्तर की गुणवत्ता की भविष्यवाणी करने में आध्यात्मिक बुद्धि की प्रभावी भूमिका होती है । अतः इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों का समर्थन होता है ।

4. परिणाम

अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार थे -

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है ।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर कीछात्राओं के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक सम्बन्ध नही पाया जाता है ।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है ।

5. शैक्षिक निहितार्थ

5.1 विद्यार्थियों हेतु शैक्षिक निहितार्थ

चूँकि इस अध्ययन में विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है ।अतः विद्यार्थियों को संवेगात्मक रूप से परिपक्व बनाने के लिए उनका आध्यात्मिक विकास अपेक्षित है । अतः विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि वे अधिक संख्या में आध्यात्मिक उन्नयन कार्यक्रमों में भागीदारी करें । विभिन्न अध्यात्मिक विद्वानों एवं विचारकों जैसे स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि के रचित साहित्य एवं लेख का अध्ययन करें ।चूँकि Bolghan-Abadi, Ghofrani, & Abde-Khodaei (2014)के द्वारा किये अध्ययन में यह ज्ञात हुआ है कि जीवनस्तर की गुणवत्ता की भविष्यवाणी करने में आध्यात्मिक बुद्धि की प्रभावी भूमिका है। अतः आध्यात्मिक विकास से विद्यार्थियों के जीवन स्तर की गुणवत्ता की भी सटीक भाविश्यवाणी संभव हो सकती है जिससे उनके आध्यात्मिक विकास उनके जीवन स्तर की गुणवत्ता में महती भूमिका निर्वाह कर सकता है।Kaur (2017)ने यह पाया है कि आध्यात्मिक बुद्धि एवं जीवन संतोष में उच्च सकारात्मक सहसंबंध पाया जाता है, अतः अध्यात्मिक बुद्धि के विकास से विद्यार्थियों के जीवन संतोष में भी उन्नयन संभव है।

5.2 शिक्षकों हेतु शैक्षिक निहितार्थ

चूँकि इस अध्ययन में विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है । अतः शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे विद्यार्थियों के समक्ष वे विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास हेतु विद्यार्थियों को विभिन्न प्रसंगों से अवगत करावें । शिक्षकों द्वारा सप्ताह या माह में एक बार किसी गतिविधि या परियोजना का उन्मुखीकरण भी किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थी आध्यात्मिक उन्नयन हेतु क्रियाशील हो सकते हैं । शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को सभी धर्मों से सम्बंधित विभिन्न साहित्य एवं उनकी उपलब्धता से अवगत करावें।जिससे विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का विकास किया जा सके।

5.3 विद्यालय प्रबंधन हेतु शैक्षिक निहितार्थ

चूँकि इस अध्ययन में विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है ।अतः विद्यालय प्रबंधन से अपेक्षा है वे विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास हेतु विभिन्न सेमीनार या कार्यशालाओं का आयोजन कर सकता है। समय समय पर शहर में उपलब्ध अथवा यात्रा करने वाले आध्यात्मिक विद्वानों के प्रवचन आयोजित कर विद्यार्थियों को लाभान्वित किया जा सकता है। विभीन

आध्यात्मिक विद्वानों द्वारा लिखे गए साहित्य की पुस्तकालय में उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। जिससे विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का विकास किया जा सके।

5.4 पालकों हेतु शैक्षिक निहितार्थ

चूँकि इस अध्ययन में विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया है । अतः पालकों से अपेक्षा है कि वे अपने घर परिवार में आध्यात्मिक वातावरण विकसित कर सकते हैं।घर परिवार में आध्यात्मिक साहित्य भी उपलब्ध करवाया जा सकता है, जिससे बच्चों में बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था से ही आध्यात्मिक गुणों का विकास किया जा सकता है।अपने आसपास के समाज, मोहल्ले अथवा धार्मिक स्थलों पर आयोजित आध्यात्मिक विकास कार्यक्रमों में सपरिवार उपस्थिति भी सुनिश्चित की जा सकती है, जिससे बालकों का अधिकतम संभावित आध्यात्मिक विकास हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- Acharya, I. (2022). *Body image issues in relation with loneliness emotional maturity and spiritual intelligence among students* [Unpublished doctoral thesis]. Gujarat University.
- https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/422434
- Alibabaie, N. (2015). A study on the relationship between quality of life, emotional intelligence and life satisfaction among students. *Health Educationand Health Promotion, 3*(1), 3-13. http://hehp.modares.ac.ir/article-5-10360-en.pdf
- Ambhore,A. M. (2019).*Spiritual intelligence, emotional maturityand life satisfaction among youths in relation to religion* [Unpublished doctoral thesis].Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University ,Aurangabad. http://hdl.handle.net/10603/409584
- Bolghan-Abadi, M., Ghofrani, F., & Abde-Khodaei, M. S. (2014). Study of the spiritual intelligence role in predicting university students' quality of life. *Journal of religion and health, 53*(1), 79–85. https://doi.org/10.1007/s10943-012-9602-0
- Chandni. (2021). Spiritual intelligence among adolescents in relation to family climate and well being [Unpublished doctoral thesis]. Guru Kashi University. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/341194
- Choudhary, S. & Bansal, P. (2023). माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन. International Journal of Arts & Education Research, 12(1), 462-469.
- https://ijaer.org/admin/uploads/paper/file1/wu4AmPHdK3ghnl0eyp7RNA==7.pdf
- Chouhan, B. S. (2013). विज्ञान, कला तथा वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन. Journal of Educational and Psychological Research. 3(1), 135-138. http://journalepr.com/images/pdf/jan13/Journal-Vol.3-No.1-Jan-20132-10-13.pdf
- Crow, L.D. and Crow, A. (1962). *Child Development and Adjustment*. The McMillan Company.
- Deepa, F. (2023). Relationship between spiritual intelligence and family climate of higher secondary students. *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 5*(3), 1-4.
- https://inspirajournals.com/uploads/Issues/1508174036.pdf

- Emmons, R. A. (2000). "Is spirituality an intelligence? Motivation, cognition, and the psychology of ultimate concern". *International Journal for the Psychology of Religion.* *10*(1): 3–26. doi:10.1207/S15327582IJPR1001_2
- Fernandes, C., & David, S. (2016). Emotional maturity in widows and widowers. Indian Journal of Positive Psychology, 7, 515–516.
- https://www.proquest.com/openview/fffcb5072183e9122790217c6aeb2c64/1?
- Gangwar, M. (2020). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की सांवेगिक परिपक्वता का अध्ययन लिंग के सन्दर्भ में. Shikshan Sanshodhan: Journal of Arts, Humanities and Social Sciences, 3(1), 157-160.
- https://shikshansanshodhan.researchculturesociety.org/wp-content/uploads/SS202001033.pdf
- Geoghegan, H. (2012). Emotional geographies of enthusiasm: belonging to the Telecommunications Heritage Group. *Area,45*(1), 40-46. https://doi.org/10.1111/j.1475-4762.2012.01128.x
- Goleman, D. (1995). *Emotional Intelligence: Why It Can Matter More Than IQ.*Bantam Books.
- Goleman, Daniel. (2000). *Working with Emotional Intelligence*. Bantam Books
- Gupt, K. P. & Singh, Y. K. (2023). बी.एड छात्रों की भावनात्मक और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच सम्बन्ध का अध्ययन. *Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 20*(4), 13-17.
- https://ignited.in/index.php/jasrae/article/download/14508/28819/72012
- Gupt, S. K. (2024). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. *International Journal of Advance and Applied Research, 11*(4), 1282-1291. https://ijaar.co.in/wp-content/uploads/2021/02/1104220.pdf
- Jersild, A.T. (1963). *The Psychology of Adolescents*. The Macmillan Company.
- Jhajhadiya, R. P. (2017). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. International Journal of Education and Science Research Review, 2(4), 28-34.
- https://ijesrr.org/publication/22/IJESRR%20V-2-4-7%20E-P.pdf
- Jobson, M. (2020). Emotional maturity among adolescents and its importance. *Indian Journal of Mental Health, 7*, 35–41. https://indianmentalhealth.com/pdf/2020/vol7-issue1/10-Original-Research-Article_Emotional-Maturity.pdf
- Joy, M., & Mathew, A. (2018). Emotional Maturity and General Well-Being of Adolescents. *IOSR Journal of Pharmacy, 8*(5), 1-6. https://kristujayanti.edu.in/SSR-III/3.4.4/Journals/2017-2018_P144.pdf
- Kaur, M. (2017). Life satisfaction of undergraduate students in relation to their mental health emotional intelligence and spiritual intelligence [Unpublished doctoral thesis]. Panjab University. http://hdl.handle.net/10603/208134
- Kaur, P.& Vyas, F. (2022). A study on sexual attitude, spiritual intelligence and emotional maturity of young adults. *IOSR Journal of Humanities and Social Science,27*(11), 17-26.
- https://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol.27-Issue11/Ser-7/D2711071726.pdf

- Kumar, G., Panda, B. K., & Sadafal, U. (2021). कामकाजी एवं गृहिणी महिलाओ के किशोर छात्र-छात्राओ की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन. *International Journal of Applied Research, 7*(8), 17-23.
- https://www.allresearchjournal.com/archives/2021/vol7issue9/PartA/7-8-68-831.pdf
- Kumar, R. (2017). मुरादाबाद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन. Universe Journal of Education & Humanities, 4(2), 6-8.
- http://www.omvsesss.org/ArticleImages/20002%20Dr.%20Ravi%20Kumar.pdf
- Kumar, V. V., & Mehta, M. (2011). *Scale for Spiritual Intelligence (SSI)* [Database record]. APA PsycTests. https://doi.org/10.1037/t16725-000
- Mahasneh, A. M., Shammout, N. A., Alkhazaleh, Z. M., Al-Alwan, A.F., & Abu-Eita JD (2015). The relationship between spiritual intelligence and personality traits among Jordanian university students. *Psychology Research and Behavior Management, 8,* 89-97. https://www.dovepress.com/article/download/20912
- Murray (2004). Explorations of Personality. Oxford University Press
- O'Donnell, K. (1997). *Endoquality - As dimensõesemotionais e espirituais do ser humanonasorgananizões.* Brazil: Casa da Qualidade.
- Parween, A. & Roy, B. (2023). A correlational study of spiritual intelligence and happiness among adolescence of Ranchi town. *International Journal of Innovative Science and Research Technology, 8(*8), 568-573.
- https://ijisrt.com/assets/upload/files/IJISRT23AUG3981.pdf
- Sarath Chandran R., Simi M., & Selvamari S. (2022). Effect of spiritual quotient on emotional maturity of secondary school teachers. *International Journal of Multidisciplinary and Current Educational Research, 4*(1), 284-288.
- https://www.ijmcer.com/wp-content/uploads/2023/07/IJMCER_GG0410283287.pdf
- Sharifi Rigi, A., Mehrabizade H. M., Beshlideh, K., Sarparast, A., Khanali Nejad, S., Amini, Z. (2019). Mediating role of distress tolerance in relationship of emotional maturity and spiritual intelligence with adjustment to university. *Journal of Research on Religion & Health,5* (1), 87-100. https://doi.org/10.22037/jrrh.v5i1.19401
- Singh, Y., & Bhargava, M. (1999). Emotional maturity scale. Tehran: Allameh Tabatabaei University Publication, 33-52.
- Singh, Y., & Bhargava, M. (1999). Manual for emotional maturity scale. Agra: National Psychological Corporation, 2(4), 16-8.
- Salovey, P., &Mayer, J. D. (1997). What is emotional intelligence? In P. Salovey & D. J. Sluyter (Eds.), *Emotional development and emotional intelligence: Educational implications* (pp. 3–34). New York, NY: Basic.
- Thakur, N. K., Hassanm M. P., & Kashyap, H. (2024). A study of spiritual intelligence among school going students. *The International Journal of Indian Psychology, 12(*3), 245-250. DOI:10.25215/1203.023
- Wigglesworth, C. (2006). Why Spiritual Intelligence is Essential to Mature Leadership.*Integral Leadership Review, 6 (*3).

- https://filetools0.pdf24.org/download.php?jobId=blog_3u7sn2q4zocesybgu6rmzlmxu5
- Wigglesworth, C. (2012). *SQ21: The Twenty-One Skills of Spiritual Intelligence*; SelectBooks, Inc
- Zohar, Danah (1997). *ReWiring the Corporate Brain: Using the New Science to Rethink How We Structure and Lead Organizations.* Berrett-Koehler Publishers.

Cite the Article:

पटेल, डॉ नीलेश कुमार . (2026). किशोरवय विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता: एक सहसम्बंधात्मक अध्ययन. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 209-218, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026., **DOI: -** **https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.23**

Disclaimer/Publisher’s Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.